INTERNATIONAL JOURNAL OF POLITICAL SCIENCE AND GOVERNANCE

E-ISSN: 2664-603X
P-ISSN: 2664-6021
IJPSG 2024; 6(2): 01-02
www.journalofpoliticalscience.com
Received: 04-04-2024
Accepted: 15-05-2024

भारत में सुशासन की संकल्पना

नीरज मीना, प्रो. निधि यादव

नीरज मीना
पीएच.डी शोद्यार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, एस.पी.सी. राजकीय महाविद्यालय, अजमेर, राजस्थान, भारत

प्रो. निधि यादव
आचार्य, राजनीति विज्ञान विभाग, एस.पी.सी. राजकीय महाविद्यालय, अजमेर, राजस्थान, भारत

सारांश

सुशासन मूल्यो, मानको व नियमों का वह संग्रह है जिसके द्वारा लोकनीति को पारदर्शितापूर्ण व सुगमतापूर्वक किया जाता है। सुशासन में शसन की गुणवत्ता से संबंधित सकारात्मक विशेषताएँ व मूल्य निहित होते हैं। सुशासन एक गतिशील अवधारणा है। भारत में विगत् दशक से सुशासन की नवीन परम्परा चली आ रही है जिससे अभूतपूर्व विकास परिलक्षित हुआ है। भारत में वर्तमान में मिनिमम सरकार और अधिकतम शसन की धारणा के साथ कार्य किए जा रहे हैं। भारत में आर्थिक विकास सुशासन से ही हो सकता है। केन्द्र सरकार राज्यों के साथ मिलकर सहयोगात्मक विकास को प्राप्त करने की ओर अग्रसर है। भारत सरकार के अन्तर्गत प्रशासनिक सुधार एवं जन शिकायत विभाग ने अपनी रिपोर्ट ''शासन की दशा–मूल्यांकन की एक रूपरेखा'' प्रकाशित की है। नीति आयोग सुशासन के थिंक टैंक के रूप में कार्य कर रहा है जिससे समस्याओं का आसानी से समाधान हो रहा है। भारत में सुशासन के नाम पर सरकारें चुनाव लड़ रही हैं एवं जनता भी सुशासन के प्रति जागरूक हो गई हैं।

मूल शब्दः प्रशासन, प्रबन्धन, सतत् विकास, रूपरेखा

प्रस्तावना

विश्व बैंक के अनुसार, सुशासन में सार्वजनिक क्षेत्र का बेहतर प्रबंधन, जवाबदेही का आदान–प्रदान और सूचना का मुक्त प्रवाह, विकास का कानूनी ढाँचा शमिल है। विश्व बैंक के अनुसार सुशासन के घटक :–

1. वैधता
2. जवाबदेही
3. योग्यता
4. कानून–सुरक्षा

भारत में सुशासन एक ऐसा वातावरण प्रदान करता है जिसमें वर्ग, जाति, लिंग के बावजूद सभी नागरिक अपनी पूरी क्षमता से विकास कर सके। सुशासन का उद्देश्य नागरिकों को प्रभावी, कुशलतापूर्वक और सार्वजनिक सेवाएं प्रदान करना भी है।
द्वितीय प्रशासनिक सुधार आयोग के अनुसार विशेषताएं :–

1. सहभागी
2. सर्वसम्मति उन्मुख
3. जवाबदेह
4. पारदर्शी
5. उत्तरदायी
6. प्रभावी
7. न्यायसंगत
8. कानून का शसन

सुशासन के आयाम :–

राजनीति – यह राजनीतिक प्रतिस्पर्धा की गुणवत्ता, प्रतिनिधित्व, शक्ति विकेन्द्रीकरण, राजव्यवस्था में विश्वास एवं जनसहभागिता पर ध्यान देता है।
विधिक –यह आयाम कानून व्यवस्था, अधिकारों की सुरक्षा, न्याय के प्रति आस्था पर केन्द्रित है।
प्रशासनिक – यह नागरिक संलग्नता, आधारभूत सेवा वितरण, लालफीताशाही, संसाधनों की क्षमता का निर्धारण करता है।
आर्थिक – यह आर्थिक स्थिरता सुनिश्चित करने एवं अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रको में

Corresponding Author:
नीरज मीना
पीएच.डी शोद्यार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, एस.पी.सी. राजकीय महाविद्यालय, अजमेर, राजस्थान, भारत

वित्तिय शासन, कारोबारी माहौल में राज्य की क्षमता को परिलक्षित करता है।

भारत में षासन संबंधी चुनौतियाँ :–

श्राजनीतिक कानूनी आर्थिक

1. राजनीति का अपराधीकरण विलंबित न्याय वित्तीय असंतुलन
2. राजनीतिक शक्ति का दुरूपयोग जवाबदेही का अभाव क्षेत्रीय असमानता

प्रशासनिक सामाजिक

1. नौकरशाही लेटलतीफी मूलभूत सुविधा का अभाव
2. भ्रष्टाचार लैंगिक असमानता
3. पारदर्शिता का अभाव प्रशासनिक पहुँच में कमी

सुशासन के पहलकारी कदम :–

1. दक्षता में वृद्धि
2. जन भागीदारी
3. सरकारी हस्तक्षेप में कमी
4. सार्वजनिक शिकायत निवारण
5. डिजिटल इण्डिया
6. पारदर्शिता
7. प्रक्रियाओं का सरलीकरण

निश्कर्श

सुशासन की संकल्पना प्राचीनकाल से ही महत्वपूर्ण भाग रही है जिससे जनकल्याण की सेवा को पूर्ण किया जा सके। वर्तमान में सभी सरकारों की सर्वोच्च प्राथमिकता में होने से यह अत्यधिक प्रभावी हुई है। सुशासन दिवस 25 दिसम्बर को मनाए जाने के पीछे यही भावना है कि यह भारत के विकास में महत्वपूर्ण है। केन्द्र सरकार द्वारा सुशासन सूंचकाक भी जारी किया जाता है जिससे राज्यों में सकारात्मक भावना का संचार हो सके। सुशासन में जन–जन का भी सक्रिय सहयोग होने से ही कार्यक्रमों का पूर्ण क्रियान्वयन हो सका है।

अतः भारत में सुशासन की संकल्पना प्रतिदिन उचित रूप से प्रगतिशील हो रही है। 2014 में राष्ट्रीय सुशासन केन्द्र की स्थापना की गई।

सन्दर्भ

1. लक्ष्मीकान्त, एम, लोक प्रशासन, मैक्ग्रा हिल पब्लिकेशन, 2021
2. फडिया, बी.एल., लोक प्रशासन, साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, 2022
3. कुमार, परविन्द, भारत में लोक प्रशासन, शक्ति पब्लिशर्स, 2022
4. www.niti.gov.in
5. www.darpg.gov.in
6. www.ncgg.org.in